पुटम् पर	ृ क्तिः	वगुद्धम्	शुद्धम् । अस्य अस्ति ।	332
46	28	' डपेथिवान्–'	' उपेयिवाननाश्वान् '	č8
47	16	⁷ आशितम्	आशितम्-	12
99	20	3. इति रनुविक-	(3-1-73) इति इतुः विक-	18
37	30	प्रायु:	प्रापुः	13
49	3	184	185	88
50	2	गत्यादौ '184	गत्यादौ,185	i Å
(6-(-), [)	20	शानच् '।	शानच्। विशेष 🕬	88
"	24	किति '	किति । जिल्ली विश	00
(150),	25	आर्घधातुक	आर्घघातुक	10
51	7	अनुभावियष्य,	अनुबिभावयिष्य,	93
,,,	13	184	1185	řę.
,,,	19	निरस्यमानः, निरस्यन्,	निरस्यमानः,	96
# 31 m	24	बद्धयज्ञेषु	वटुयज्ञेषु	et
53	26	वष्कयतीह	बष्कयतीह	96
56	2	Aदुरंह:, इति रूपाणि।	इति रूपाणि। Aदुरंह:।	13
57	16	आव्छिच्छिषित्वा	ঞাম্বিভিন্ত িছিলে।	7.6
59	Title	आप्त मार्थिक ।	नाम्भास- नामनीच 12	001
61	27	'सार्वधातुक	ं सार्वि घातु क	42
62	2	ईषिष्ययाणः	ईषिष्यमाणः	102
1 1 1 E	23	(वा. 2-4-45)	(বা. 2-4-46)	103
,,	30	((197)	,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	
63	26	,, 1919	,, offp 08	105
66	17	(6-4-16) दीर्घः।	(6-4-16) इति दीर्घ: ।	001
67	20	इयर्जन विकास	इयजनं 💮	EH
70	22	' सम्पदादित्वात्—'	सम्पदादित्वात्,	47
99	25	' कृत्यच '	'कृत्यचः 'ि १०००	FII
99	33	मार्च्छीत्	माचीत्	1.5
71	29	चितगजेन्द्र	चित्तगजेन्द्र	115
72	7	1548	1448	
, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	22	कान (५५)	कालेन 🗁 🗥 💯	
33	28	'कमण्यण्')	(कर्मण्यण् १३)	YIL
73	11	भातुकाव्ये ।	धातुकान्ये (2-78)	BII
75	25	'कुन् शिल्पिसंज्ञयोः'	'कुन् शिल्पिसंशयोः' [इ.	3.3.5]
78	31	' इयजनं	' इयजनै	119
83	27	् युगर्दि त	युगुर्दित ।	15:1